IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
IJARSCT
Impact Factor: 4.819
Volume 10, Issue 1, October 2020

lu~ 1950 ds ckn Hkkjr esa lkEiznkf;drk

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsaV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

स्वतंत्र भारत के केन्द्रीयकृत ढॉचे में क्षेत्रीयता के उभार ने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के बोध को गहरा किया। उस बोध से हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों में तीखे उभार आए। जवाहरलाल नेहरू के धर्मनिरपेक्षता का आश्वासन बहुत प्रभावी न रहा। वह दिन प्रतिदिन बिगड़ता ही गया। 1960 के दशक तक सामाजिक आर्थिक संरचना के असमान विकास ने तथा स्वतंत्र भारत के स्वर्णिम भविष्य के स्वप्न भंग ने असहज स्थिति पैदा की। मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर में 1962 ई0 में भयावह दंगे हुए और हिन्दू – मुसलमान एकता के सूत्र तोड़नें के प्रयास किए गए। जवाहर लाल नेहरू इन दंगों से बेहद व्यथित थे। इन दंगों ने उसी वर्ष चीन से हुए युद्ध ने नेहरू जी के मानवतावादी विचारों को ठेस पहुचाई थी। हिन्दू– मुस्लिम भाई–भाई एवं हिन्दी–चीनी भाई –भाई की अवधारणा देखते–देखते खण्डित हो रही थी।

15 अगस्त –1952 को स्वतंत्रता दिवस के भाषण में उन्होंने देश के सामनें मौजूद खतरों का जिक्र किया उन्होनें कहा साम्प्रदायिकता देश को केवल ज्यादा कमजोर कर सकती है। धार्मिक कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक नेताओं ने सबक लेने से इन्कार कर दिया। ''हमें साम्प्रदायिक तत्वों और स्वार्थी लालची लोगों से सतर्क रहना है जो झूँठ और पाखण्ड देश को नुकसान पहुँचाते है। यदि इन तीन चीज को कभी नहीं रोका गया तो हमारे देश को बर्बाद कर देंगे।[1]

[1]. द स्टेटसमैन, दिल्ली अगस्त 16, 1952

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in